

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 07-04-2025

विषय सूची

शहरी क्षेत्रों में भूमि अवतलन

विश्व स्वास्थ्य दिवस 2025

भारतीय वित्तीय नियामकों को अधिक स्वायत्तता की आवश्यकता: IMF-विश्व बैंक रिपोर्ट

पशुधन में एंटीबायोटिक उपयोग का भविष्य: FAO

जलकृषि

संक्षिप्त समाचार

शिंगल्स वैक्सीन से डिमेंशिया का खतरा कम हो सकता है

सेमालूटाइड

समय उपयोग सर्वेक्षण

NAFTA (उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता)

अमेरिकी संविधान में 22वाँ संशोधन

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने "भारत में महिलाएँ और पुरुष 2024" रिपोर्ट जारी की

हेडियन प्रोटोकॉस्ट

कैप्चा(CAPTCHA)

अभ्यास इंद्र 2025

शहरी क्षेत्रों में भूमि अवतलन

संदर्भ

- पश्चिम बंगाल के बेलगछिया में एक डंपिंग ग्राउंड में भूमि धंसाव के कारण सैकड़ों परिवार जल और विद्युत के बिना रह गए, जिससे मानव निर्मित शहरी संकट की बढ़ती चुनौतियों पर प्रकाश पड़ा।

भूमि अवतलन क्या है?

- राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन (NOAA) के अनुसार, भूमि अवतलन “भूमिगत सामग्री की हलचल के कारण भूमि का धंसाव” है।
 - यह कई कारणों से हो सकता है, चाहे वह मानव निर्मित हो या प्राकृतिक, जैसे कि पानी, तेल या प्राकृतिक संसाधनों का निष्कासन, साथ ही खनन गतिविधियाँ।
- पूरे विश्व में, कई शहर धीरे-धीरे डूब रहे हैं, जिनमें इंडोनेशिया में जकार्ता या फिलीपींस में मनीला जैसे

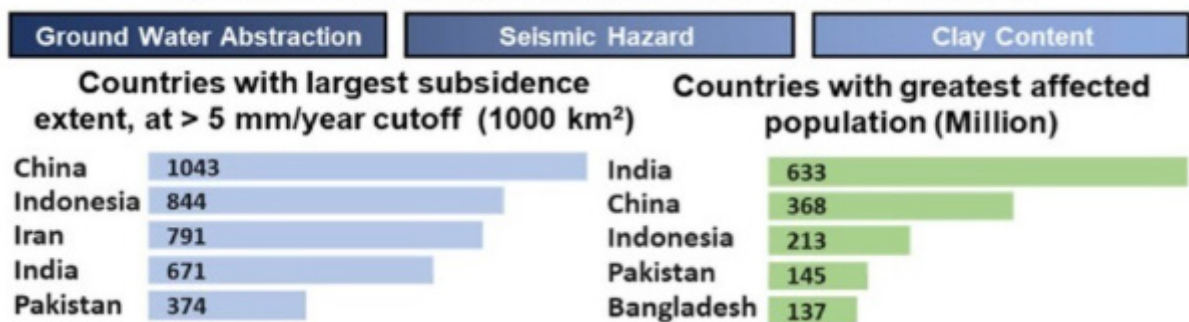
उष्णकटिबंधीय मेगासिटी या न्यू ऑरलियन्स, वैकूवर, मैक्सिको सिटी आदि जैसे स्थान शामिल हैं।

- 2023 में उत्तराखंड के जोशीमठ के तीर्थ नगर में भूमि धंसाव से लगभग 65 प्रतिशत घर प्रभावित हुए हैं।

शहरी क्षेत्रों में भूमि अवतलन के कारण

- भूजल का अत्यधिक दोहन:** घरेलू औद्योगिक और कृषि उपयोग के लिए भूजल का असंतुलित दोहन जलभृतों के अपरदन का कारण बनता है।
- अपशिष्ट का अनियमित डंपिंग:** नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट के ढेर भूमि पर भारी दबाव डालते हैं, विशेषतः यदि उन्हें कमजोर या दलदली मृदा पर डंप किया जाए।
- तेजी से शहरीकरण:** ऊँची इमारतें और बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ मृदा की वहन क्षमता का आकलन किए बिना भूमि पर भारी दबाव डालती हैं।
- प्राकृतिक कारण:** भूवैज्ञानिक दोष, विवर्तनिक गतिविधियाँ और भूमिगत चट्टानों का विघटन (जैसे, कार्स्ट क्षेत्रों में चूना पत्थर)।

Top 3 predictors that positively affect land subsidence rate



भूमि अवतलन के प्रभाव

- बुनियादी ढाँचे को हानि:** सड़कों, पुलों, इमारतों और पाइपलाइनों में दरारें शहरी स्थानीय निकायों के लिए रखरखाव लागत बढ़ाती हैं।
- आबादी का विस्थापन:** लैंडफिल या अस्थिर क्षेत्रों के पास रहने वाले झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले और कम आय वाले परिवार सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट:** इससे शहरी बाढ़ और वेक्टर जनित बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।
 - रासायनिक कीचड़ और गंदी गैसों के संपर्क में आने से श्वसन और पाचन स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

आगे की राह

- वैज्ञानिक लैंडफिल प्रबंधन:** शहरी कचरे को आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके अलग-अलग किया जाना चाहिए, पुनर्चक्रित किया जाना चाहिए और संसाधित किया जाना चाहिए।
 - ढलान स्थिरता की निरंतर निगरानी के साथ लैंडफिल पर ऊँचाई और वजन प्रतिबंध लागू किए जाने चाहिए।
- मृदा अवतलन की संभावना का अनुमान लगाने के लिए मृदा परीक्षण और सिमुलेशन मॉडल का उपयोग किया जाना चाहिए। प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली स्थापित करने

से सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में आपदाओं को रोकने में सहायता मिल सकती है।

- निर्वाचित नगरपालिका प्रतिनिधियों के माध्यम से स्थानीय शासन को पुनर्जीवित करना महत्वपूर्ण है। जवाबदेह नागरिक निकायों के बिना, बेलगछिया जैसी आपदाएँ फिर से होने की संभावना है।
- कूड़ा बीनने वालों को शहरी विकास योजनाओं में शामिल किया जाना चाहिए।

Source: TH

विश्व स्वास्थ्य दिवस 2025

संदर्भ

- विश्व स्वास्थ्य दिवस, जो प्रतिवर्ष 7 अप्रैल को मनाया जाता है, वैश्विक स्वास्थ्य संबंधी ज्वलंत मुद्दों पर प्रकाश डालता है तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार के लिए कार्रवाई को प्रेरित करता है।

परिचय

- इसकी स्थापना 1950 में WHO द्वारा की गई थी।
 - विश्व स्वास्थ्य दिवस का विचार 1948 में जिनेवा, स्विटजरलैंड में आयोजित प्रथम विश्व स्वास्थ्य सभा से आया था।
- इसका उद्देश्य वैश्विक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को संबोधित करने के लिए सरकारों, संस्थानों और समुदायों को एकजुट करना है।
- 2025 की थीम:** “स्वस्थ शुरुआत, आशापूर्ण भविष्य” मातृ और नवजात शिशु के स्वास्थ्य पर केंद्रित है, देशों से रोके जा सकने वाली मौतों को कम करने एवं महिलाओं की दीर्घकालिक कल्याण को प्राथमिकता देने का आग्रह करता है।
- भारत की प्रतिबद्धता:** स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, न्यायसंगत, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा के लिए प्रयासों को मजबूत करता है।
- WHO के अनुसार, प्रत्येक वर्ष करीब 300,000 महिलाएँ गर्भावस्था या प्रसव के कारण अपनी जान गंवाती हैं, जबकि 2 मिलियन से अधिक बच्चे अपने

जीवन के पहले महीने में ही मर जाते हैं और लगभग 2 मिलियन बच्चे मृत पैदा होते हैं।

- वर्तमान प्रवृत्ति के आधार पर, 5 में से 4 देश 2030 तक मातृ उत्तरजीविता में सुधार के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ट्रैक से दूर हैं।

भारत की मातृ मृत्यु दर और बाल मृत्यु दर

- भारत में MMR (मातृ मृत्यु अनुपात) 130 (2014-16) से घटकर 97 (2018-20) प्रति 1,00,000 जीवित जन्म हो गया - 33 अंकों की गिरावट।
- शिशु और बाल मृत्यु दर: IMR (शिशु मृत्यु दर) 39 (2014) से घटकर 28 (2020) प्रति 1,000 जीवित जन्म हो गया।
- NMR (नवजात मृत्यु दर) 26 (2014) से घटकर 20 (2020) प्रति 1,000 जीवित जन्म हो गया।

India vs Global Progress (1990-2020)

Indicators	India Reduction (%)	Global Reduction (%)
Maternal Mortality Ratio (MMR)	83%	42%
Neonatal Mortality Rate (NMR)	63%	51%
Infant Mortality Rate (IMR)	69%	55%
Under-5 Mortality Rate (U5MR)	75%	58%

भारत की स्वास्थ्य सेवा में चुनौतियाँ

- स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच:** ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में प्रायः पर्याप्त स्वास्थ्य सेवा सुविधाएँ और प्रशिक्षित पेशेवर नहीं होते।
- खराब बुनियादी ढाँचा:** अस्पताल, उपकरण और स्वच्छता सहित अपर्याप्त चिकित्सा बुनियादी ढाँचा, विशेष रूप से कम सेवा वाले क्षेत्रों में।
- उच्च रोग भार:** भारत संक्रामक और गैर-संचारी दोनों तरह की बीमारियों का भारी भार का सामना कर रहा है, जिसके लिए विविध स्वास्थ्य सेवा समाधानों की आवश्यकता है।
- वित्तीय बाधाएँ:** स्वास्थ्य सेवा के लिए उच्च आउट-ऑफ-पॉकेट व्यय, जिससे कम आय वाले परिवारों पर वित्तीय दबाव पड़ता है।
- स्वास्थ्य सेवा पहुँच में असमानता:** भूगोल और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वास्थ्य सेवा पहुँच में असमानताएँ।

- **कुशल कार्यबल की कमी:** डॉक्टरों, नर्सों और विशेषज्ञों सहित स्वास्थ्य सेवा कर्मियों की अपर्याप्त संख्या।
- **खंडित स्वास्थ्य प्रणाली:** सार्वजनिक और निजी स्वास्थ्य क्षेत्रों के बीच एकीकरण और समन्वय की कमी।

सरकारी पहल

- **मातृ मृत्यु निगरानी और प्रतिक्रिया (MDSR):** मातृ मृत्यु के कारणों की पहचान करने एवं प्रसूति देखभाल में सुधार के लिए सुधारात्मक कार्रवाई को लागू करने

के लिए सुविधा और समुदाय स्तर पर आयोजित किया जाता है।

- **प्रजनन और बाल स्वास्थ्य (RCH) पोर्टल:** गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं को ट्रैक करने के लिए एक नाम-आधारित डिजिटल प्लेटफॉर्म, समय पर प्रसवपूर्व, प्रसव एवं प्रसवोत्तर देखभाल सुनिश्चित करता है।
- **एनीमिया मुक्त भारत (AMB):** पोषण अभियान का हिस्सा; किशोरों और गर्भवती महिलाओं में एनीमिया के परीक्षण, उपचार और रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करता है।



Key Interventions for Maternal Health In India

- 1

Institutional Deliveries on the Rise

 - ✓ 88.6% of all births now take place in health institutions (NFHS-5, 2019–21), including among tribal women – a major win under the National Health Mission.
- 2

Janani Suraksha Yojana (JSY)

 - ✓ Conditional cash transfer scheme (since 2005) to boost institutional deliveries.
 - ✓ 36.77 Lakh women benefited (April–Sept 2024).
- 3

Janani Shishu Suraksha Karyakaram (JSSK)

 - ✓ Ensures **completely free care** for pregnant women and sick infants – covering delivery (including C-section), transport, diagnostics in public hospitals.
- 4

Pradhan Mantri Surakshit Matritva Abhiyan (PMSMA)

 - ✓ Free, quality antenatal care on the 9th of every month since 2016.
 - ✓ Over 6 crore women examined as of April 2025.
- 5

Extended PMSMA Strategy

 - ✓ Focus on **high-risk pregnancies** with financial incentives for extra 3 visits + ASHA support till safe delivery.
- 6

SUMAN (2019)

 - ✓ Assures **zero-cost, respectful and quality care** for all women and new borns in public health facilities.
 - ✓ 41,519 facilities onboarded as of Dec 2024.
- 7

LaQshya (2017)

 - ✓ Aims to improve labour room and maternity OT quality in public hospitals.
 - ✓ 1,106 Labour Rooms and 809 Maternity OTs certified by Dec 2024.

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM):** मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार, डिजिटल स्वास्थ्य पहुँच का विस्तार, तथा बुनियादी ढाँचे और सेवाओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM)** एक एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र है जो एक अंतर-संचालन योग्य डिजिटल बुनियादी ढाँचे के माध्यम से रोगियों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और प्रणालियों को सुरक्षित रूप से जोड़ता है।
- **रोग उन्मूलन और नियंत्रण:** मलेरिया उन्मूलन में भारत की प्रमुख प्रगति, 2017 और 2023 के बीच मामलों में 69% की गिरावट और मृत्यु में 68% की कमी।
 - भारत ने 2024 में सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में ट्रेकोमा को समाप्त कर दिया है।
 - राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP) के अंतर्गत, 2015 और 2023 के बीच टीबी की घटनाओं में 17.7% की गिरावट आई।
 - भारत ने 2024 तक कालाजार उन्मूलन को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया है।

निष्कर्ष

- मातृ एवं नवजात शिशु का स्वास्थ्य कई कारणों से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सीधे माताओं, शिशुओं, परिवारों और समुदायों के कल्याण को प्रभावित करता है।
- गर्भावस्था के दौरान नियमित स्वास्थ्य जाँच को प्राथमिकता देने से संभावित जटिलताओं का जल्द पता लगाने और उनका प्रबंधन करने में सहायता मिल सकती है।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य, विशेष रूप से मातृ एवं शिशु देखभाल में भारत की प्रगति, न्यायसंगत और समावेशी स्वास्थ्य सेवा के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

Source: PIB

भारतीय वित्तीय नियामकों को अधिक स्वायत्तता की आवश्यकता: IMF-विश्व बैंक रिपोर्ट

समाचार में

- IMF-विश्व बैंक के आकलन पर आधारित भारत की वित्तीय प्रणाली पर एक वैश्विक रिपोर्ट में विधायी सुधारों

के माध्यम से वित्तीय नियामकों (RBI, SEBI और IRDAI सहित) की शक्ति और स्वतंत्रता को मजबूत करने का सुझाव दिया गया है।

भारत में वित्तीय नियामक

- भारत की वित्तीय प्रणाली को विभिन्न प्राधिकरणों द्वारा विनियमित किया जाता है जो बाजारों में पारदर्शिता, स्थिरता और जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं।
 - ये नियामक निष्पक्ष, व्यवस्थित और कुशल वित्तीय वातावरण बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो अर्थव्यवस्था की वृद्धि और विकास का समर्थन करता है।

प्रमुख नियामक

- **भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI):** यह भारत में प्रतिभूति बाजार के लिए सर्वोच्च नियामक है, जिसका कार्य निवेशकों के हितों की रक्षा करना और प्रतिभूति बाजार के विकास को बढ़ावा देना है।
- **बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI):** IRDAI भारत में बीमा उद्योग को विनियमित और बढ़ावा देता है।
 - यह बीमा क्षेत्र के विकास को सुनिश्चित करता है और पॉलिसीधारकों के हितों की रक्षा करता है।
- **भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)** देश की मौद्रिक नीति का संचालन करता है।
 - RBI भारत का केंद्रीय बैंक है और देश में बैंकिंग प्रणाली के प्राथमिक नियामक के रूप में कार्य करता है।
- **पेंशन फंड विनियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDA):** PFRDA भारत में पेंशन क्षेत्र को विनियमित करता है, जो राष्ट्रीय पेंशन योजना (NPS) और अन्य पेंशन उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **कॉर्पोरेट मामलों का मंत्रालय (NPS):** यह कंपनी अधिनियम, 1956, 2013 और अन्य संबद्ध अधिनियमों, विधेयकों और नियमों के माध्यम से भारत में कॉर्पोरेट मामलों को विनियमित करता है।

- NPS निवेशकों की सुरक्षा भी करता है और हितधारकों को कई महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करता है।
- **वित्त मंत्रालय:** यह देश के आर्थिक मामलों के लिए जिम्मेदार है, जो भारत के राजकोष के रूप में कार्य करता है।
- यह कराधान, वित्तीय कानून, वित्तीय संस्थानों, पूँजी बाजारों के साथ-साथ केंद्रीय बजट सहित केंद्रीय और राज्य वित्त के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करता है।

मुद्दे और चिंताएँ

- **विनियामक निर्णयों पर सरकार का प्रभाव:** वर्तमान कानून वित्त मंत्रालय को विनियामक निकायों के बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंधन पर नियंत्रण रखने में सक्षम बनाता है।
- **RBI की सीमित स्वायत्तता:** वित्त मंत्रालय RBI के लिए अपीलीय प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है, जिसके पास पर्यवेक्षी निर्णयों को पलटने की शक्तियाँ हैं। उल्लेखनीय रूप से, 2019 में, सरकार ने एक छोटे शहरी सहकारी बैंक का लाइसेंस रद्द करने के RBI के कदम को पलट दिया।
- राज्य के स्वामित्व वाले बैंकों और बीमा कंपनियों पर RBI का अधिकार सीमित है - यह इन संस्थानों में बोर्ड परिवर्तन या विलय को आसानी से लागू नहीं कर सकता है।
- **बीमा में शासन संबंधी अंतराल:** IRDAI के पास राज्य द्वारा संचालित बीमा कंपनियों के विरुद्ध निर्णायक रूप से कार्य करने के लिए सीमित उपकरण हैं, जो सुधारों और दक्षता में बाधा डालते हैं।

भारत में वित्तीय नियामक निकायों में स्वायत्तता का महत्व

पहलू	महत्व
वित्तीय स्थिरता बनाए रखना	यह नियामकों को वित्तीय वास्तविकताओं के आधार पर संकटों में तेजी से कार्य करने की अनुमति देता है।
निवेशक और जमाकर्ता का विश्वास बढ़ाना	निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है, तथा जनता का विश्वास बढ़ाता है।

अच्छे कॉर्पोरेट प्रशासन को कायम रखना	वित्तीय संस्थाओं में प्रशासन मानकों का सख्ती से प्रवर्तन संभव बनाता है।
जोखिम प्रबंधन और पर्यवेक्षण को मजबूत बनाना	प्रणालीगत वित्तीय जोखिमों की समय पर पहचान और शमन में सहायता करता है।
वैश्विक निवेशक विश्वास और FDI को बढ़ावा देना	विदेशी निवेशकों के लिए भारतीय बाजारों की विश्वसनीयता और आकर्षण को बढ़ाता है।
जलवायु और साइबर जोखिम जैसी उभरती चुनौतियों से निपटना	उभरते जोखिमों के प्रति नवाचार और विनियामक प्रतिक्रियाओं का समर्थन करता है।

अनुशंसाएँ

- IMF-विश्व बैंक की रिपोर्ट में वित्त मंत्रालय के अपीलीय अधिकार को एक स्वतंत्र एजेंसी को हस्तांतरित करने, IRDAI को सरकारी स्वामित्व वाली जीवन बीमा कंपनियों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने का अधिकार देने और कॉर्पोरेट प्रशासन में सुधार के लिए बीमाकर्ता के बोर्ड के कार्यों को कार्यकारी प्रबंधन से अलग करने का सुझाव दिया गया है।
- RBI को बोर्ड की निगरानी पर स्पष्ट मार्गदर्शन जारी करना चाहिए और हितों के टकराव को समाप्त करना चाहिए, जैसे कि अपने कर्मचारियों को बैंक बोर्ड में रखना।
- इसके अतिरिक्त, रिपोर्ट में तरलता आघातों से निपटने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSBs) के पूँजी आधार को मजबूत करने का आह्वान किया गया है और जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों को संबोधित करने सहित वित्तीय समूहों की बेहतर निगरानी की सिफारिश की गई है।
- तनाव परीक्षण से पता चलता है कि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) के पास मध्यम ऋण वृद्धि के लिए पर्याप्त पूँजी है, लेकिन PSBs की क्षमता कम है।
 - जबकि म्यूचुअल फंड और बॉन्ड फंड लचीले हैं, कॉर्पोरेट ऋण बाजार में परिसंपत्ति परिसमापन से होने

वाले जोखिमों पर और ध्यान देने की आवश्यकता है।

- प्रतिभूति बाजारों में जोखिमों को दूर करने के लिए सेबी के कदमों की प्रशंसा की जाती है, और बैंकिंग क्षेत्र से परे मैक्रोप्रूडेंशियल ओवरसाइट को बढ़ाने और साइबर सुरक्षा लचीलापन में सुधार करने की सलाह दी जाती है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- अधिक स्थिर और लचीली वित्तीय प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए, भारत के वित्तीय नियामकों को स्वतंत्र, समय पर निर्णय लेने के लिए अधिक स्वायत्तता और अधिकार की आवश्यकता है।
- उनकी स्वतंत्रता को मजबूत करने से शासन, जोखिम प्रबंधन और समग्र वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता में सुधार करने में भी सहायता मिलेगी।

Source :TH

पशुधन में एंटीबायोटिक उपयोग का भविष्य: FAO

सन्दर्भ

- खाद्य एवं कृषि संगठन के एक हालिया अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि पशुधन में वैश्विक एंटीबायोटिक का उपयोग 2040 तक 30% तक बढ़ सकता है, जिससे इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

पशुधन में एंटीबायोटिक्स का उपयोग

- एंटीबायोटिक्स का उपयोग संक्रमण के उपचार के लिए, तथा वृद्धि को बढ़ावा देने वाले और निवारक एजेंट के रूप में किया जाता है।
- पशु कृषि में एंटीबायोटिक्स के अत्यधिक उपयोग और दुरुपयोग ने दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया के विकास को गति दी है, जिससे पशु एवं मानव स्वास्थ्य दोनों के लिए जोखिम उत्पन्न हो रहा है।
 - AMR सामान्य संक्रमणों का उपचार करना कठिन बना सकता है, जिससे स्वास्थ्य सेवा लागत और मृत्यु दर बढ़ सकती है।

- WHO ने इसे 'मूक महामारी' कहा है, क्योंकि इससे रोगाणुरोधी प्रतिरोध बढ़ने का गंभीर खतरा है, जिससे बैक्टीरिया एंटीबायोटिक उपचार का विरोध करने के लिए विकसित होते हैं।

- दवा प्रतिरोधी संक्रमण पहले से ही प्रत्येक वर्ष वैश्विक स्तर पर 1.2 मिलियन से अधिक मौतों का कारण बनते हैं।

- पशुधन में एंटीबायोटिक का उपयोग 2019 में 110,777 टन से बढ़कर 2040 तक 143,481 टन होने की संभावना है, जो 29.5% की वृद्धि दर्शाता है।

मुख्य भौगोलिक क्षेत्र हैं:

- एशिया और प्रशांत क्षेत्र: 64.6%
- दक्षिण अमेरिका: 19%
- अफ्रीका: 5.7%
- उत्तरी अमेरिका: 5.5% और
- यूरोप: 5.2%

पशुधन में एंटीबायोटिक्स की भूमिका

- **चिकित्सीय उपयोग:** पशुओं में जीवाणु संक्रमण के उपचार के लिए एंटीबायोटिक्स का उपयोग किया जाता है, जिससे उनका स्वास्थ्य और उत्पादकता सुनिश्चित होती है।
- **निवारक उपयोग:** एंटीबायोटिक्स का रोगनिरोधी प्रशासन स्वस्थ पशुओं में बीमारियों को रोकने में सहायता करता है, विशेष रूप से गहन कृषि प्रणालियों में।
- **विकास संवर्धन:** कुछ क्षेत्रों में, विकास दर और फ़ीड दक्षता को बढ़ाने के लिए एंटीबायोटिक्स का उपयोग किया जाता है, हालाँकि इस अभ्यास को विश्व स्तर पर हतोत्साहित किया जा रहा है।

उछाल के पीछे मुख्य कारण

- **गहन कृषि प्रणालियाँ:** बड़े पैमाने पर औद्योगिक खेत प्रायः भीड़-भाड़ वाले, उच्च-तनाव वाले वातावरण में पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए एंटीबायोटिक दवाओं पर निर्भर करते हैं।

- **नियामक अंतराल:** कई देशों में पशुओं में एंटीबायोटिक के उपयोग पर सख्त दिशा-निर्देशों का अभाव है, या उन्हें प्रभावी ढंग से लागू करने में विफल हैं।
- **विकास को बढ़ावा देने वाले के रूप में एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग:** एंटीबायोटिक्स जानवरों को तेजी से बढ़ने और खराब परिस्थितियों में जीवित रहने में सहायता कर सकते हैं, जिससे वे गहन प्रणालियों में आर्थिक रूप से आकर्षक बन जाते हैं।
- **वैश्विक व्यापार और आंदोलन:** पशुधन, मांस उत्पादों और फ़ीड में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सीमाओं के पार प्रतिरोधी उपभेदों को फैला सकता है।
 - रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) जीन प्लास्मिड जैसे मोबाइल आनुवंशिक तत्वों के माध्यम से फैल सकते हैं।
- **टीकाकरण कार्यक्रमों, जैव सुरक्षा उपायों और बेहतर पशु पोषण में निवेश करने से एंटीबायोटिक दवाओं की आवश्यकता कम हो सकती है।**
- **AMR पर भारत की राष्ट्रीय कार्य योजना:** इसका उद्देश्य कृषि में एंटीबायोटिक निर्भरता को कम करना है।
- **मानक पशु चिकित्सा उपचार दिशानिर्देश :** इसे केंद्रीय पशुपालन मंत्रालय द्वारा आयुर्वेदिक एवं नृजातीय पशु चिकित्सा पद्धतियों को शामिल करते हुए पशुधन और मुर्गी पालन में एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग को विनियमित करने के लिए पेश किया गया था।

Source: DTE

जलकृषि

संदर्भ

- भारत अपनी विस्तृत तटरेखा और अंतर्देशीय जल संसाधनों के साथ जलीय कृषि में वैश्विक नेता के रूप में उभरा है। पिछले दो दशकों में, भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है, विशेषतः झींगा पालन में, जिससे आर्थिक और पोषण संबंधी दोनों लक्ष्यों में संतुलन बना हुआ है।

जलकृषि क्या है?

- जलीय कृषि में स्वच्छ जल, लवणीय जल या समुद्री वातावरण में जलीय प्रजातियों की नियंत्रित खेती शामिल है। यह कैप्चर फिशरीज का पूरक है और पशु प्रोटीन की बढ़ती माँग को पूरा करने, रोजगार सृजित करने और निर्यात में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **इसे निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:**
 - स्वच्छ जल की जलीय कृषि
 - तटीय जलीय कृषि
 - समुद्री खेती
 - लवणीय जल की जलीय कृषि

जलकृषि में भारत की उल्लेखनीय प्रगति

- **भारत वर्तमान में:**
 - विश्व स्तर पर जलीय कृषि उत्पादों का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

नीतियां और प्रतिबद्धताएँ

- **संयुक्त राष्ट्र महासभा AMR घोषणा (2024):** विश्व भर की सरकारों ने 2030 तक कृषि खाद्य प्रणालियों में रोगाणुरोधी उपयोग को 30-50% तक कम करने का संकल्प लिया है।
 - UNGA AMR को मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक विकास और वैश्विक स्थिरता के लिए एक बड़ी चुनौती मानता है।
- **रेनोफार्म पहल:** इसे FAO द्वारा प्रारंभ किया गया था, जो देशों को एंटीबायोटिक उपयोग को रोकने में सहायता करने के लिए नीति मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता प्रदान करता है।
- **एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण:** यह मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को एकीकृत करता है - AMR के मुद्दे को संबोधित करने के लिए, जैसा कि FAO, WHO और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन द्वारा बल दिया गया है।
- **पशुधन उत्पादकता का अनुकूलन:** पशु स्वास्थ्य, प्रबंधन प्रथाओं और उत्पादन दक्षता में सुधार से एंटीबायोटिक के उपयोग में 57% तक की कमी आ सकती है।

- झींगा उत्पादन के लिए विश्व में दूसरा स्थान।
- आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, ओडिशा और गुजरात जैसे प्रमुख जलीय कृषि राज्यों का केंद्र।
- भारत की जलीय कृषि की सफलता का एक मुख्य आकर्षण इसका संपन्न ब्लैक टाइगर प्रॉन (पेनियस मोनोडॉन) उद्योग है। इस उच्च मूल्य वाली प्रजाति की खेती उपयुक्त तटीय क्षेत्रों में की जाती है और घरेलू खपत एवं निर्यात दोनों के लिए इसकी मजबूत मांग है।

जलीय कृषि में भारत की उच्च वृद्धि के पीछे के कारक

- **भौगोलिक और प्राकृतिक लाभ:** लंबी तटरेखा (11,098 किमी.) और प्रचुर मात्रा में लवणीय जल के क्षेत्र। तटीय भूजल और ज्वारीय पहुँच जल लवणता नियंत्रण में सहायक है (झींगा पालन के लिए 10-25 ग्राम/लीटर की आवश्यकता होती है)।
- **नवीन कृषि तकनीक:** बेहतर उपज और रोग नियंत्रण के लिए छोटे तालाबों (जैसे, आंध्र प्रदेश में) को बढ़ावा देना। लवणीय जल और नदी के जल के मिश्रण के माध्यम से नियंत्रित तालाब प्रबंधन एवं लवणता संतुलन।
- **निजी और संस्थागत सहयोग:** ICAR-CIBA जैसे संस्थानों से अनुसंधान सहायता, जिसने 'विशिष्ट रोगजनक मुक्त' ब्रूडस्टॉक विकसित किया।
 - रोग का पता लगाने के लिए एक्वाफीड उद्योगों और प्रयोगशालाओं का विकास।

जलकृषि में चुनौतियाँ

- **रोग प्रकोप:** विब्रियो हार्वेई और व्हाइट स्पॉट सिंड्रोम वायरस जैसे रोगजनकों के कारण वार्षिक उपज में 25% तक की हानि होती है।
- **पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन दबाव:** लवणता में बदलाव, जल के तापमान में बदलाव और चरम मौसम की घटनाएँ उत्पादन चक्र को प्रभावित करती हैं।
- **बुनियादी ढाँचे और संसाधनों की कमी:** दूरदराज के क्षेत्रों में परीक्षण प्रयोगशालाओं, बायोसिक्योर हैचरी और कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स तक बेहतर पहुँच की आवश्यकता।

प्रमुख सरकारी और अनुसंधान पहल

- **ICAR-CIBA (केंद्रीय खारा जलकृषि संस्थान):** SPF (विशिष्ट रोगजनक-मुक्त) झींगा विकास में अग्रणी।
 - जीवाणुजनित रोगों से निपटने के लिए फेज थेरेपी को बढ़ावा देना।
- पीएम मत्स्य संपदा योजना जैसी सरकारी योजनाओं के माध्यम से छोटे किसानों के लिए कौशल प्रशिक्षण, ऋण पहुँच और सहायता।
- संक्रमण की निगरानी और उसे जल्दी रोकने के लिए प्रयोगशाला नेटवर्क एवं नैदानिक सेवाएँ।

आगे की राह

- विकास को बनाए रखने और जलीय कृषि को जलवायु-अनुकूल बनाने के लिए, भारत को निम्न करने की आवश्यकता है:
 - जैव-सुरक्षित हैचरी का विस्तार करना और SPF ब्रूडस्टॉक उत्पादन का विस्तार करना।
 - फीड दक्षता, प्रजनन और रोग प्रतिरोध में अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करना।
 - कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स और निर्यात बुनियादी ढाँचे में सुधार करना।
 - छोटे किसानों के लिए डिजिटल जलीय कृषि प्रबंधन प्रणाली को बढ़ावा देना।
 - मैग्रोव-अनुकूल झींगा पालन जैसी पर्यावरणीय स्थिरता को एकीकृत करना।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

शिंगल्स वैक्सीन से डिमेंशिया का खतरा कम हो सकता है

समाचार में

- वेल्स में हुए एक अध्ययन से पता चलता है कि दाद का टीका सात वर्षों में नए डिमेंशिया के निदान की संभावना को लगभग 20% तक कम कर सकता है।

- दाद (हरपीज ज़ोस्टर) एक वायरल संक्रमण है जो वैरिसेला-ज़ोस्टर वायरस (VZV) के कारण होता है, वही वायरस जो चिकनपॉक्स का कारण बनता है।

डिमेंशिया

- यह बीमारियों का एक समूह है जो मुख्य रूप से वृद्ध वयस्कों में स्मृति, सोच और दैनिक गतिविधियों को प्रभावित करता है, हालाँकि हर किसी को उम्र के साथ यह विकसित नहीं होता है।
- डिमेंशिया के सामान्य रूपों में अल्जाइमर रोग, संवहनी डिमेंशिया, लेवी बॉडीज के साथ डिमेंशिया और फ्रंटोटेम्पोरल डिमेंशिया शामिल हैं।
- जोखिम कारकों में आयु (65+), उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, धूम्रपान, अत्यधिक शराब का सेवन, शारीरिक निष्क्रियता, सामाजिक अलगाव और अवसाद शामिल हैं।
- डिमेंशिया उन बीमारियों के कारण होता है जो मस्तिष्क की कोशिकाओं को क्षति पहुँचाती हैं, जिससे सामान्य उम्र बढ़ने से परे संज्ञानात्मक गिरावट होती है।
- यह स्ट्रोक, संक्रमण, शराब के दुरुपयोग या शारीरिक मस्तिष्क की चोटों से भी उत्पन्न हो सकता है।
- प्रभाव:** इसका व्यक्तियों, देखभाल करने वालों, परिवारों और समाज पर शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़ता है।
- उपचार:** यद्यपि डिमेंशिया का कोई इलाज नहीं है, शारीरिक गतिविधि, मस्तिष्क को उत्तेजित करने वाली गतिविधियाँ और दवाएँ (जैसे, कोलिनेस्टरेज अवरोधक, NMDA विरोधी, रक्तचाप नियंत्रण) जैसे उपचार लक्षणों को प्रबंधित करने में सहायता कर सकते हैं।
- हाल के अध्ययन का निष्कर्ष:** नेचर में प्रकाशित शोध में पाया गया कि दाद के टीके के लिए पात्र लोगों (उनकी जन्म तिथि के आधार पर) में अपात्र लोगों की तुलना में डिमेंशिया विकसित होने का जोखिम कम था। यह प्रभाव पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अधिक स्पष्ट था।

Source :TH

सेमाग्लूटाइड

संदर्भ

- एक हालिया अध्ययन में पाया गया कि मौखिक सेमाग्लूटाइड (राइबेलसस) दिल के दौर, स्ट्रोक और हृदय संबंधी मृत्यु के जोखिम को 14% तक कम करता है।

परिचय

- सेमाग्लूटाइड एक GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट (GLP-1RA) है जिसका उद्देश्य हृदय संबंधी जोखिम में उल्लेखनीय कमी लाना है, इसे 2021 में मोटापे और टाइप 2 मधुमेह जैसी स्थितियों वाले लोगों में वजन प्रबंधन के लिए अनुमोदित किया गया था।
- परीक्षण का ध्यान टाइप 2 मधुमेह, हृदय रोग और क्रोनिक किडनी रोग वाले लोगों में प्रमुख प्रतिकूल हृदय संबंधी घटनाओं (MACE) को कम करने पर केंद्रित था।
- अध्ययन में पाया गया कि मौखिक सेमाग्लूटाइड ने प्लेसबो की तुलना में MACE को काफी कम कर दिया।
- प्लेसबो का उपयोग अध्ययनों में एक नए उपचार के प्रभावों की तुलना एक गैर-सक्रिय उपचार से करने के लिए किया जाता है।

मधुमेह क्या है?

- मधुमेह एक पुरानी चिकित्सा स्थिति है जिसमें शरीर को रक्त शर्करा (ग्लूकोज) के स्तर को नियंत्रित करने में परेशानी होती है।
- यह तब होता है जब शरीर या तो पर्याप्त इंसुलिन (एक हार्मोन जो रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद करता है) का उत्पादन नहीं करता है या अपने द्वारा उत्पादित इंसुलिन का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं करता है।
- इसके दो मुख्य प्रकार हैं:
 - टाइप 1 मधुमेह:** शरीर बिल्कुल भी इंसुलिन का उत्पादन नहीं करता है, और यह सामान्यतः बचपन या किशोरावस्था में विकसित होता है।

- **टाइप 2 मधुमेह:** शरीर इंसुलिन का ठीक से उपयोग नहीं करता है (इंसुलिन प्रतिरोध), प्रायः जीवनशैली कारकों के कारण, और सामान्यतः वयस्कों में विकसित होता है।
- **मधुमेह का प्रबंधन:** यदि प्रबंधित नहीं किया जाता है, तो मधुमेह हृदय रोग, गुर्दे की समस्याओं और तंत्रिका क्षति जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को उत्पन्न कर सकता है।
- मधुमेह के प्रबंधन में सामान्यतः आहार, व्यायाम, दवा और नियमित रक्त शर्करा की निगरानी का संयोजन शामिल होता है।

Source: TH

समय उपयोग सर्वेक्षण

समाचार में

- समय उपयोग सर्वेक्षण 2024 से महत्वपूर्ण आँकड़े सामने आए हैं कि भारत में लोग विभिन्न गतिविधियों में अपना समय किस प्रकार आवंटित करते हैं।

समय उपयोग सर्वेक्षण

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के तहत राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) ने जनवरी से दिसंबर 2019 तक पहला अखिल भारतीय समय उपयोग सर्वेक्षण आयोजित किया और 2024 के लिए दूसरा सर्वेक्षण फरवरी 2025 में जारी किया गया।
- यह भुगतान और अवैतनिक कार्यों, सीखने, सामाजिककरण, अवकाश और स्व-देखभाल गतिविधियों पर व्यय किए गए समय का डेटा प्रदान करता है।

क्या आप जानते हैं?

- भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका जैसे देशों के साथ मिलकर विभिन्न गतिविधियों में पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण करने के लिए राष्ट्रीय समय उपयोग सर्वेक्षण आयोजित करता है।

उद्देश्य

- इसका उद्देश्य भुगतान और अवैतनिक गतिविधियों, जैसे देखभाल, स्वयंसेवी कार्य एवं घरेलू कामों में पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी का आकलन करना है।
- यह सरकारी विभागों, संगठनों और शोधकर्ताओं द्वारा नीति निर्माण, योजना और निर्णय लेने में सहायता करता है।

हाल के निष्कर्ष

- दिल्ली के निवासी कार्य से जुड़ी गतिविधियों पर सबसे समय समय व्यतीत करते हैं, औसतन रोजाना 563 मिनट, जो राष्ट्रीय औसत 440 मिनट से कहीं अधिक है।
- गोवा 536 मिनट के साथ दूसरे नंबर पर है, जो 2019 से उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है।
- सर्वेक्षण में अवैतनिक घरेलू सेवाओं में लैंगिक अंतर को उजागर किया गया है, जिसमें महिलाएँ रोजाना 289 मिनट समर्पित करती हैं जबकि पुरुष 88 मिनट।
- सीखने की गतिविधियों में थोड़ी गिरावट आई है, राष्ट्रीय औसत 2019 में 424 मिनट से गिरकर 2024 में 414 मिनट हो गया है।
- आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु सीखने के समय में सबसे आगे हैं। सामाजिकता और सामुदायिक भागीदारी राज्यों में अलग-अलग रुझान दिखाती है, नागालैंड में सामाजिक जुड़ाव में वृद्धि की सूचना मिली है।
- उत्तराखंड में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ, देश भर में अवकाश गतिविधियों में वृद्धि हुई है।
- नींद और स्वच्छता सहित स्व-देखभाल के समय में राष्ट्रीय स्तर पर कमी आई है, मेघालय तथा जम्मू एवं कश्मीर जैसे कुछ राज्यों में वृद्धि देखी गई है।

Source :IE

NAFTA (उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता)

संदर्भ

- संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ व्यापार समझौते को आगे बढ़ाने और 26% पारस्परिक टैरिफ से बचने के प्रयास में, भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने अपने NAFTA प्रभाग का विस्तार किया है।

उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता (NAFTA)

- उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता (NAFTA) संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको के बीच एक त्रिपक्षीय व्यापार समझौता था, जो 1994 से 2020 तक प्रभावी रहा।
- इसने विश्व के सबसे बड़े मुक्त व्यापार क्षेत्रों में से एक बनाया, टैरिफ को समाप्त किया और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए व्यापार बाधाओं को कम किया।
- 2020 में, NAFTA को डिजिटल व्यापार, श्रम मानकों और पर्यावरण नियमों पर अद्यतन प्रावधानों के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका-मैक्सिको-कनाडा समझौते (USMCA) द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।

भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता में चुनौतियाँ

- **डेटा स्थानीयकरण की मांग:** अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि ने भारत की डेटा स्थानीयकरण आवश्यकताओं के बारे में चिंता जताई है, जो बैंकों और भुगतान सेवा प्रदाताओं को भारत के भीतर डेटा संग्रहीत करने के लिए बाध्य करती है।
- **बौद्धिक संपदा (IP) संबंधी चिंताएँ:** भारत को USTR की प्राथमिकता निगरानी सूची में रखा गया है, क्योंकि:
 - विशिष्ट व्यापार रहस्य संरक्षण कानूनों का अभाव है।
 - लंबी पेटेंट स्वीकृति प्रक्रियाएँ।
 - IP कानूनों का असंगत प्रवर्तन।
- **श्रम और पर्यावरण मानक:** भारत ने अभी तक किसी भी पश्चिमी देश के साथ व्यापक व्यापार समझौता नहीं किया है, जिसका मुख्य कारण श्रम अधिकार प्रवर्तन तंत्र पर अलग-अलग रुख है। विकसित देशों द्वारा माँगे गए पर्यावरणीय स्थिरता मानक।

Source: IE

अमेरिकी संविधान में 22वाँ संशोधन

संक्षेप

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपतियों के लिए दो कार्यकाल की सीमा पर टिप्पणी

करने के बाद अमेरिकी संविधान का 22वाँ संशोधन सुर्खियों में था।

अमेरिकी संविधान में 22वाँ संशोधन

- अमेरिकी संविधान में 22वें संशोधन में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति दो बार से अधिक राष्ट्रपति नहीं चुना जा सकता।
- 1951 में संशोधन की पुष्टि की गई, जब राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट 1932 से 1944 तक निरंतर चार बार चुने गए थे।
- अगर किसी ने दूसरे के कार्यकाल के दो वर्ष से अधिक समय तक राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया है (उदाहरण के लिए, एक उपराष्ट्रपति जो राष्ट्रपति की मृत्यु या त्यागपत्र के कारण राष्ट्रपति बन गया), तो उन्हें केवल एक बार ही चुना जा सकता है।
- इस प्रकार, प्रभावी रूप से, अधिकतम अमेरिकी राष्ट्रपति का कार्यकाल 10 वर्ष (उत्तराधिकारी के रूप में दो वर्ष और दो पूर्ण कार्यकाल) हो सकता है।

Source: TH

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने “भारत में महिलाएँ और पुरुष 2024” रिपोर्ट जारी की

संदर्भ

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने “भारत में महिलाएँ और पुरुष 2024: चयनित संकेतक और डेटा” शीर्षक से अपने प्रकाशन का 26वाँ संस्करण जारी किया।

परिचय

- यह प्रकाशन भारत में लैंगिक परिदृश्य का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत करता है, तथा जनसंख्या, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक भागीदारी और निर्णय-निर्माण जैसे प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित चयनित संकेतक एवं आंकड़े प्रस्तुत करता है, जो सभी विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/संगठनों से प्राप्त किए गए हैं।

प्रकाशन की कुछ मुख्य बातें

- **शिक्षा:** प्राथमिक और उच्चतर माध्यमिक दोनों स्तरों पर नामांकन के लिए लिंग समानता सूचकांक (GPI) वित्त वर्ष 23 और वित्त वर्ष 22 की तुलना में वित्त वर्ष 24 में बढ़ा, जो दर्शाता है कि स्कूल में अधिक लड़कियाँ नामांकित हैं।
 - उच्च प्राथमिक और प्रारंभिक स्तरों पर, लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए नामांकन संख्या लगभग बराबर थी।
- **श्रम बल भागीदारी:** 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की महिलाओं के लिए श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में 2017-18 में 49.8% से 2023-24 में 60.1% तक उल्लेखनीय सुधार देखा गया।
 - यह कार्यबल और आर्थिक गतिविधि में महिलाओं के बढ़ते समावेश को दर्शाता है।
- **वित्तीय समावेशन:** नवीनतम आँकड़ों के अनुसार भारत में सभी बैंक खातों में से 39.2% महिलाओं के पास हैं। बैंकों में कुल जमा में उनका योगदान 39.7% है।
 - ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति सबसे प्रमुख है, जहाँ वे खाताधारकों का 42.2% हिस्सा हैं।
- **उद्यमिता और आर्थिक स्वतंत्रता:** विनिर्माण, व्यापार और सेवाओं में महिला-प्रधान स्वामित्व प्रतिष्ठानों की संख्या 2021-22 और 2023-24 के बीच लगातार बढ़ रही है।
 - **कम से कम एक महिला निदेशक (DPIIT-मान्यता प्राप्त) वाले स्टार्टअप:**
 - 2017 में: 1,943 स्टार्टअप
 - 2024 में: 17,405 स्टार्टअप
 - यह 7 वर्षों में 800% से अधिक की वृद्धि है।
- **राजनीतिक भागीदारी:** महिला मतदाता मतदान में पिछले कुछ वर्षों में बदलाव देखा गया है, जो 2019 में बढ़कर 67.2% हो गया, इसके बाद 2024 में मामूली गिरावट के साथ 65.8% हो गया।

- **महिलाओं के खिलाफ हिंसा:** भारत में 18 से 49 वर्ष की आयु की लगभग 31.9% विवाहित महिलाओं ने पति द्वारा हिंसा का अनुभव किया है, जिसमें सबसे अधिक प्रचलन कर्नाटक (48.4%), बिहार (42.5%) और मणिपुर (41.6%) में देखा गया है।

Source: AIR

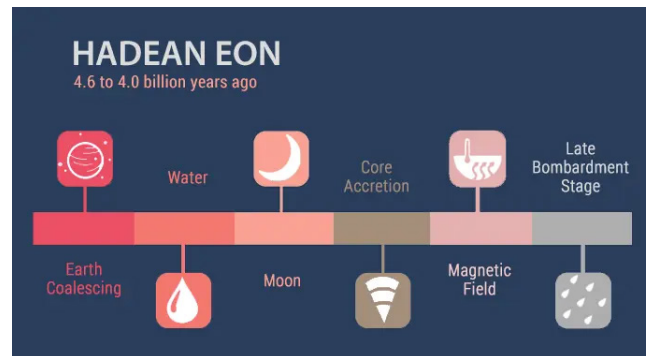
हेडियन प्रोटोक्रस्ट

संदर्भ

- एक नए अध्ययन में इस धारणा पर सवाल उठाया गया है कि हेडियन प्रोटोक्रस्ट के बाद पृथ्वी के रासायनिक चिह्न केवल सबडक्शन प्रारंभ होने के बाद ही प्रकट हुए।

परिचय

- हेडियन प्रोटोक्रस्ट का तात्पर्य हेडियन ईऑन के दौरान बनी पृथ्वी की प्रथम परत से है, जो लगभग 4.6 बिलियन से 4 बिलियन वर्ष पहले तक फैली हुई थी।
 - यह ईऑन पृथ्वी के निर्माण के ठीक बाद के समय को दर्शाता है, जब ग्रह अभी भी बहुत गर्म और काफी हद तक पिघला हुआ था।
 - इस समय के दौरान, पृथ्वी की सतह पिघली हुई थी और अंतरिक्ष चट्टानों द्वारा संघात हो रहा था।



- **ज्वालामुखी गतिविधि:** निरंतर ज्वालामुखी विस्फोट और क्षुद्रग्रहों की बमबारी ने सतह को आकार दिया।
- **परिस्थितियाँ:** उष्ण, दुर्गम, तरल जल की कमी या बिल्कुल न होना और ज्वालामुखी गैसों से भरा वातावरण।
- भूपर्पटी के मोटे हिस्सों ने धीरे-धीरे पहले महाद्वीपों का निर्माण किया, जो एस्थेनोस्फेरिक मेंटल पर चले गए।

- प्लेट विवर्तनिकी की शुरुआत प्लेटों के प्रवाहित होने, एक-दूसरे के ऊपर घर्षण करने या एक-दूसरे के नीचे डूबने से हुई।
- इन गतिशीलताओं ने भूपर्पटी में अलग-अलग रासायनिक संकेत छोड़े, जिससे वैज्ञानिकों को प्लेट विवर्तनिकी का अध्ययन करने में सहायता मिली।
- एक नए अध्ययन ने इस धारणा पर सवाल उठाया है कि ये संकेत केवल क्षेपण क्रिया प्रारंभ होने के बाद दिखाई दिए।
- शोधकर्ताओं का सुझाव है कि ये संकेत हेडियन प्रोटोक्रस्ट में उपस्थित थे।
- यह खोज भूविज्ञान में एक महत्वपूर्ण विचार को चुनौती देती है और स्वतंत्र शोध द्वारा सत्यापन की आवश्यकता है।

Source: TH

कैप्चा (CAPTCHA)

संदर्भ

- CAPTCHA (कम्प्यूटर और मानव को अलग-अलग पहचानने के लिए पूर्णतः स्वचालित सार्वजनिक ट्यूरिंग परीक्षण) एक महत्वपूर्ण सुरक्षा उपकरण है, जिसने वेबसाइटों पर उपयोगकर्ता खातों और डेटा की सुरक्षा के तरीके को बदल दिया है।

कैप्चा क्या है?

- कैप्चा एक प्रकार का चुनौती-प्रतिक्रिया परीक्षण है जिसे मानव उपयोगकर्ताओं को स्वचालित बॉट्स से अलग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इसमें सामान्यतः ऐसे कार्य शामिल होते हैं जो मनुष्यों

के लिए आसान होते हैं लेकिन मशीनों के लिए पूरा करना मुश्किल होता है।

- **पृष्ठभूमि:** कैप्चा ट्यूरिंग टेस्ट नामक एक विचार पर आधारित है। इसे ब्रिटिश गणितज्ञ एलन ट्यूरिंग ने 1950 के दशक में प्रस्तावित किया था।
- कैप्चा को 2000 के दशक की शुरुआत में बॉट्स द्वारा बढ़ते इंटरनेट दुरुपयोग के जवाब में पेश किया गया था, जिसमें फर्जी पंजीकरण, स्पैम और डेटा स्कैपिंग शामिल थे।
- कैप्चा शब्द 2003 में लुइस वॉन आह, मैनुअल ब्लम, निकोलस जे. हॉपर और जॉन लैंगफोर्ड द्वारा कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय में गढ़ा गया था।

Source: TH

अभ्यास इंद्र 2025

संदर्भ

- भारत-रूस द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास, इंद्र 2025 का 14वाँ संस्करण हाल ही में संपन्न हुआ।

परिचय

- अभ्यास में गतिविधियों और संरचित अभ्यासों की एक विस्तृत शृंखला शामिल थी, जो सामान्य समुद्री खतरों का मुकाबला करने की दिशा में अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई थी।
- 2003 में अपनी स्थापना के बाद से इंद्रा शृंखला के अभ्यास भारत-रूस रक्षा संबंधों की आधारशिला रहे हैं और दोनों देश समुद्री सुरक्षा के महत्व तथा सामान्य खतरों एवं चिंताओं का मुकाबला करने के लिए सहयोगी दृष्टिकोण की आवश्यकता को पहचानते हैं।

Source: PIB

